मधुबन ओम् शान्ति अंक 309 अप्रैल 2018

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-03-18)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा खुशियों के झूले में झूलने वाले, खुशनसीब, संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बाबा ने हम सबको अपना बनाके कितना खुशी, सच्चाई, प्रेम में मालामाल करके, खुशनसीब बना दिया है। कभी कोई भी ऐसी घड़ी नहीं आती है, न आयेगी जो मैं खुश ना रहूँ। हम सभी ऐसे भाग्यवान हैं जो बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया है। बाबा कहते कभी सीरियस रूप धारण नहीं करना। कोई भी बात है, बात बात हो जायेगी परन्तु हमारा चेहरा सदा चमकता रहे, बाबा के साथ का अनुभव करते रहें। हमारे अन्दर की भावना है कि बाबा से जो सुख शान्ति मिली है, वह कभी भूले नहीं। इस अन्तिम जन्म की अन्तिम घड़ियों में इस खजाने को सम्भाल कर रखना है। बाबा की मीठी मीठी शिक्षायें जो मिल रही हैं उनको धारण करने से यह दिमाग समय पर बहुत मदद करता है।

संगमयुग पर निश्चयबुद्धि हैं, मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ शीतल हैं, सच्चाई, प्रेम और निःस्वार्थ भाव है तो यहीं पर निश्चिंत रहने की बादशाही है। यह निःस्वार्थ शब्द मुझे बहुत खींचता है, कभी भी कोई स्वार्थ नहीं। बाबा आपने सब कुछ दे दिया है, अभी मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो आज दिन तक कभी दु:ख का नाम-निशान नहीं आया है। दु:ख काहे का करें, किसका करें! शरीर है थोड़ा-थोड़ा बिचारा कभी-कभी नीचे ऊपर करता है... परन्तु मैं ऐसे नहीं कहूंगी कि क्या करूँ! नहीं, नहीं...। चलाने वाला बाबा चला रहा है, हम भाग्य से बाबा के साथ से चल रहे हैं। मेरे जैसा खुशनसीब सब बन जायें तो मुझे बड़ी खुशी होगी। खुशनसीब, बाबा के रहो करीब। बाबा कभी मुझे अकेला नहीं छोड़ता है, साथ में घुमाता है। बाबा और भाग्य दोनों आपस में मिल गये हैं। भाग्य कहता है सदा खुश रहो, बाबा कहता है मैं तेरा साथी हूँ ना। यह क्यों, क्या हमारे मुख से नहीं निकल सकता। जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा, और जो होगा वह बहुत अच्छा, इसलिए मेरे भाई बहनों खुश रहो आबाद रहो, साक्षी होके अपना अच्छा पार्ट बजाओ। बाबा की याद सदा सुखदाई है। बाबा कहता बच्ची सिर्फ तुम शान्त रहो मैं अपनी करामात दिखाता हूँ। आप सभी छोटे बड़े आपस में मिल करके ऐसी सेवा करो जो सारी दुनिया की नज़रों में बाबा प्रत्यक्ष हो जाए। सारे विश्व को सूक्ष्म में शान्ति और प्रेम बांटना है। बाबा की यही भावना है कि सभी मेरे बच्चे अब वरदानी मूर्त बन जायें। उस मन्दिर में तो जड़ मूर्ति होती है, हम तो चैतन्य में हैं ना। भले अभी मूर्ति नहीं बने हैं लेकिन त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त, सेवाधारी हैं। सेवा क्या है? मैं कौन, मेरा कौन - यह देखते रहो अनुभव करते रहो। बाबा का वरदान है बच्चे सदा जीते रहो, जगते और जगाते रहो। सुस्ती और अलबेलाई का नाम-निशान न हो, इसमें बहुत खबरदार होशियार रहना है। सब कार्य समय पर करना इसका अच्छा रिकार्ड हो, फिर मन वाणी कर्म से अच्छी सेवा करना, यह हमारा फर्ज कहता है। श्वांस, संकल्प, समय सब अच्छा सफल हो। कोई के साथ भी हमारा व्यवहार या बातचीत ऐसी न हो जो समय निष्फल हो जाए। टाइम को सफल करने से एनर्जी भी अच्छी बनती है। तो बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें इतना अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ की उड़ान भर रहे हो ना। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“सहनशीलता के गुण से बुरे को अच्छे में बदल दो”

1) छोटी बात को बड़ी बनाना या बड़ी को छोटी बनाना, परेशान होना वा अपने अधिकारीपन की शान में रहना - यह सब अपनी स्थिति पर है। निश्चय बुद्धि बच्चे सहनशीलता के गुण को धारण कर बुरे को भी अच्छे में बदल देते हैं।

2) बापदादा सभी को आगे बढ़ने की युक्ति बताते हैं कि बच्चे - सहनशीलता के गुण को अपना लो। जितना सहनशील बनेंगे, सत्यता की शक्ति होगी, उतना सहज अपना राज्य सतयुग ला सकेंगे। स्थूल कार्य वा अलौकिक सेवा के कार्य में सहज सफलता मिलती रहेगी।

3) पुरुषार्थी जीवन में चलते-चलते कई परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है तो व्यक्तियों द्वारा सहन भी करना पड़ता है लेकिन यह सहन करना ही उन्नति का रास्ता है। परिस्थिति का सामना करेंगे तो परिस्थिति स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी।

4) याद रखो कि अभी यह समय हर एक के सब हिसाब-किताब चुक्तु होने का है इसलिए ड्रामानुसार प्रैक्टिकल पेपर होने ही हैं। कई बातें अच्छे रूप में सामने आयेंगी तो कई बार अच्छा रूप होते भी बाहर का पर्दा नुकसान का दिखाई देगा, उस समय थोड़ा सा धैर्यवत होकर, सहनशील स्थिति से अन्तर्मुखी होकर देखो तो बाहर के पर्दे के अन्दर जो कल्याण छिपा हुआ है, वह दिखाई देगा।

5) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल-पसन्द स्वभाव-संस्कार वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाले। दिल-पसन्द अर्थात् बोल, कर्म और वृत्ति से सबको हल्के-पन की अनुभूति कराने वाले। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से, सहनशीलता के गुण की धारणा से उन्हों को भी पहचान देकर परिवर्तन करो।

6) आप स्नेह के सागर बाप के बच्चे मास्टर स्नेह के सागर हो इसलिए यदि कोई अपने स्वभाव के वश क्रोध भी करता है तो आप उसे स्नेह दो। ऐसे नहीं उसने 10 बार क्रोध किया और आपने एक बार जवाब दे दिया। नहीं। चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। सहनशील बन उसे भी समा लेंगे। अगर एक झूठ बोलता है, दूसरा क्रोध करता है - तो यह कोई बहादुरी नहीं है। आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव न आये तब कहेंगे सहनशील। यदि थोड़ा भी जोश आ गया तो उसको सहनशील नहीं कहेंगे।

7) सहन करने के पीछे शक्ति है। सहन करना अर्थात् शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप में दिखाना। सहन किया तो किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया, दूसरे के लिये नहीं सहन किया, बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा मानने की दुआयें जरूर मिलेंगी।

8) कई बच्चे बातों को सामने देखते हैं और सोचते हैं कि हमने तो बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिए। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआयें क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो। इसलिए मजबूरी से सहन नहीं करो, खुशी से सहन करो, इसमें ही फायदा है।

9) कोई कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन आपका चेहरा ऐसी प्रसन्नता से भरपूर हो जो आपके वायब्रेशन की छाया में वह भी शीतल हो जाये, इसके लिए दूसरों की कमजोरी, देखते-सुनते उसके प्रभाव में नहीं आओ। उनका वर्णन भी नहीं करो। सुनो, सहन करो और समा लो।

10) जब स्व के परिवर्तन का वा सहन करने का समय आता है तब कई कहते हैं कि क्या ‘मुझे ही मरना है’, ‘मुझे ही बदलना है’, ‘मुझे ही सहन करना है’ लेकिन जैसे लोग कहते हैं कि ‘मरा और स्वर्ग गया’ उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है।

11) कई बच्चे कहते हैं ‘‘मैं ग़लत हूँ ही नहीं, वो ग़लत है’’, इसलिए गलत वाले को बदलना चाहिए। लेकिन इसमें दोनों को बदलना पड़े। ‘बदलने’ शब्द को आध्यात्मिक भाषा में ‘बदलना’ नहीं लेकिन ‘आगे बढ़ना’ कहा जाता है।

12) कोई कैसी भी आत्मा हो, गाली देने वाली भी हो, निन्दा करने वाली हो लेकिन अपनी शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा, स्थिति द्वारा ऐसी आत्मा को भी गुण दान या सहनशीलता की शक्ति का वरदान दो। क्रोधी आत्मा परवश है इसलिए रहम के शीतल जल द्वारा उसे भी शीतल बनाओ।

13) अमृतवेले से लेकर रात तक यही लक्ष्य रखो कि दुआयें देनी हैं, दुआयें लेनी हैं। और कुछ भी नहीं करो लेकिन दुआएं दो और दुआएं लो। कोई आपको दु:ख भी दे तो भी आपको दुआयें देनी हैं, इससे सहनशीलता का गुण स्वत: आ जायेगा।

14) कई बच्चे बॉडी कान्सेस के कारण बार-बार कहेंगे ‘मैं’

यह समझता हूँ, 'मैंने' जो कहा वही ठीक है, 'मैंने' जो सोचा वही ठीक है–यह रॉयल रूप का मैं-पन प्रतिज्ञा को कमजोर कर देता है। और कमजोर आत्मा कहती है मैं इतना सहन नहीं कर सकता; अपने को इतना एकदम निर्माण कर दूँ, इतना नहीं कर सकता; इतनी समस्यायें पार नहीं कर सकता। इसलिए पहले इस ''मैं'' ''मैं'' की बलि चढ़ाओ तो सहनशीलता का गुण आ जायेगा।

15) स्वयं सहन कर दूसरे को शक्ति देना, कमजोरियों को समा लेना - यही सेवा भाव है। सहन करना, मरना नहीं है। कई सोचते हैं हम तो सहन कर-करके मर जायेंगे। क्या हमें ही मरना है! लेकिन यह मरना नहीं है, यह सबके दिलों में स्नेह से जीना है।

16) कोई कैसा भी विरोधी हो, रावण से भी तेज हो, एक बार नहीं 10 बार भी आपको सहन करना पड़े फिर भी सहनशक्ति का फल अविनाशी और मधुर होगा। वह भी एक दिन जरुर बदल जायेगा। सिर्फ यह भावना नहीं रखो कि मैंने इतना सहन किया, तो यह भी कुछ करे। अल्पकाल के फल की भावना नहीं रखो। रहम भाव रखो - यही है सेवाभाव। अच्छा - ओम् शान्ति।

शिवबाबा याद है? *ओम् शान्ति* 12-09-14 *मधुबन*

"बाबा मेरा कैसा है, यह दुनिया को दिखाने के लिए इस शरीर में बैठे हैं, हमारी लाइफ से नॉलेज का स्वरूप देख अंधों को आँख मिल जाए" (दादी जानकी)

आज कौन-सी आकर्षण ने आप सबको यहाँ खींचा है? (आपके स्नेह ने खींचा) यह सूक्ष्म ईश्वरीय स्नेह बाबा के समीप हमको रखता, औरों को खींचता। मेरा स्नेह खींचके लाया यानि परिवार का जो प्यार है, बाबा अब हम बच्चों को उस लव में लीन देख रहा है।

मैंने ऐसे फील किया, सारे विश्व भर में जो मुझ आत्मा के लिए सभी के अन्दर स्नेह भावना आ रही है, उसने आप सबके पास खींचकर लाया है। मुझे यह भी फीलिंग आ रही है कि बाबा ने अपनी दृष्टि में बिठाके सारे विश्व भर का यह स्पेशल सैर कराया।

यह संगठन के प्यार का बल है, जो आज 4 बजे का अमृतवेला यहाँ किया। ऐसे लगा कि आत्मा शरीर में है तो अभी क्या करने का है, क्या भगवान को कराना है किसलिए बिठाया है! तो यह फीलिंग थी। शुरू से ले करके, बाबा मम्मा से ले करके खास बाबा ने ही हिस्ट्री हॉल में शाम को 7 बजे का योग शुरू कराया। यह समय बहुत वैल्युबूल है फिर अमृतवेले का योग उसकी अपनी वैल्यु है।

हर एक ने अपना-अपना पार्ट बजाते, अपनी सेवाओं में अपने आपको सम्भाला है। संगठन में किसी की कमी को न देख अपनी कमी न रहे, यह ध्यान रख रहे हैं। किसकी भी कमी न दिखाई पड़े, न सुनाई पड़े, ना ही कोई किसी को कुछ सुनावे। तो प्रैक्टिकली अभी हमको किसी की भी कमी न दिखाई पड़ती है, न सुनाई पड़ती है, न कोई सुना भी सकता है। सभी बाबा के अनन्य बच्चे हैं। तो साक्षी होके देखा तो मुझे अभी संकल्प आया कि शरीर के कारण कईयों की अच्छी सेवायें हुई है। दादी गुल्जार की भी कमाल थी, सूक्ष्म दृष्टि, प्यार, बाबा का सन्देश यह सब उसका खेल देखा।

आज यहाँ जैसा योग हुआ, ऐसा कभी नहीं हुआ होगा। मैंने नहीं समझा था मैं कोई योग कर रही हूँ, बाबा मेरे को ले करके साथ में विश्व में घुमा रहा है। मैं बाबा के साथ थी, बाबा ने इतनी शक्ति दिलाई जो साथ बिठाके आपको यहाँ खींचके लाया।

अभी मैं आत्मा इस शरीर में किसलिए हूँ? मेरा बाबा कैसा है! दुनिया को दिखाई पड़े। और जो बाबा की नॉलेज है वो सार रूप में मुख से सुनाने वाले नहीं हैं, पर हमारी लाइफ में नॉलेज का स्वरूप देख जैसे अन्धों को आँख मिल जाये। और बाबा ने कहा अभी यहाँ शरीर में थोड़े दिन हैं, शान्तिधाम जाने के लिए हम तैयार बैठे हैं और सुखधाम में आने के लिए हमारी जीवन सभी को प्रेरणा देवे, सुखधाम में हम कैसे होंगे! अभी लाइफ हमारी ऐसी हो जो सबको प्रेरणा मिले।

जब से शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया तब से उसको मैंने देखा, जाना, पाया.. तो यह साक्षी होकरके देखती हूँ। गीता और भागवत.. इस लाइफ में गीता का ज्ञान इसेन्स रूप में समाया हुआ है। फिर कहता है मामेकम याद करो, विकर्म विनाश करो। अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियां हमारी ऐसी सफल हों जो हमारी जीवन की सफलता को देख... हरेक अपनी

जीवन को देखे और सब कुछ सफल कर सफलता को पावे। त्याग में, सेवा में हर एक का पार्ट अपना-अपना है लेकिन अब हर एक को सच्ची तपस्या करनी है।

हम सब अभी इस पुरानी दुनिया में किसलिए बैठे हैं! साक्षात् बाप कैसा है, वो आँखों से देखा, दिल से जाना.. ऐसे बाबा का अनुभव हम हर एक बच्चे के द्वारा सबको हो। बाकी न कोई इच्छा है, न ममता है। मैं यह सेवा कर रही हूँ या यह मेरी सेवा है, इस फीलिंग से भी परे। हरेक विशेष आत्मा है, एक की भेंट दूसरे से नहीं कर सकते हैं। दो एक जैसे नहीं, पर हरेक में जो विशेषतायें हैं, उसमें बाबा अपनी सकाश भरके चला रहा है। हमारे श्वाँस, संकल्प में और कोई बात है ही नहीं। ओ. के.।

दूसरा क्लास

"पवित्रता हदों से पार ले जाती है, रूहानियत की आकर्षण आ जाती है"

(मुख्य बहनों के साथ रूहरिहान)

यह सभी बाबा की पली हुई हैं। ड्रामा अनुसार सभी डायरेक्ट बाबा से पले हुए हैं। और यज्ञ सेवा में हाज़िरी ऐसी है, अभी आप जो कर सकते हो वो मैं तो नहीं कर सकती हूँ। मुझे सिर्फ 5 बातों का अटेन्शन रहता है जिस कारण से सफलता ने साथ दिया, यह अनुभव है।

अभी हम पवित्रता की गहराई में जाते हैं, पवित्रता शब्द ही बेहद में ले आता है। जहाँ पवित्रता की खुशबू है वहाँ रूहानी आकर्षण होती है। जब रुहानियत कहते हैं तो एक तो बाबा बुद्धि में आता है और हम सब एक हैं, यह अच्छी तरह से भान आता है। जब पवित्रता है तो सत्यता, नम्रता नेचुरल है। पवित्रता, सत्यता को प्रैक्टिकल में लाती है। फिर नम्रता है तो गम्भीरता है, मधुरता है। अभी भले आप भी सेवा कर रही हैं और इन्होंने (दादियों ने) पहले सेवा की हुई है, हमारे जो पूर्वज हैं उनका यह फोटो है। उन सबको सामने रखो, जो फाउण्डेशन हैं, उनके जीवन में यह पाँचों बातें नेचुरल थी। वन्डर है, मैं एक एक को देखती हूँ।

तो प्रैक्टिकली अपने-अपने स्थानों पर कोई हद न हो। किसी के पास कुछ हदें हों तो मुझे पता नहीं है, मैंने दीदी को यहाँ देखा, मैं दीदी से बहुत सीखी हूँ। खास दीदी ने मेरा बाबा के साथ सखा का सम्बन्ध जोड़ा। दादी ने फिर सेवाओं का बहुत अच्छा विस्तार किया है। दोनों ही सदा बेहद में रही हैं। आजकल जो चक्र का ज्ञान है, संगमयुग है, घर जाना है। चक्र का ज्ञान बाबा कहता है, बुद्धि में घूमता रहे, स्व-दर्शन होता रहे। फिर झाड़ का ज्ञान, नीचे बैठे हैं। झाड़ में नीचे बैठके ऊपर जाने की तैयारी कर रहे हैं और सतयुग में आने के संस्कार भी भर रहे हैं। सतयुगी संस्कार बनाने के लिए बाबा ने हम सबको झाड के नीचे बिठाया है। अभी प्रैक्टिकल देख रहे हैं, बाबा हमको भी खींच रहा है ऊपर में। तो सारे ज्ञान ने हमारे जीवन में काम किया है। सारा ज्ञान दिल में भी है, दिमाग में भी है और दृष्टि में भी है।

मेरे को देख हर एक खुश हुए मैं तो बहुत खुश हुई क्योंकि आप सभी बाबा के अनन्य बच्चे हो, अनन्य माना इन जैसी और कोई नहीं। सब एक जैसे नहीं हैं परन्तु सभी वन्डरफुल है, अनन्य बच्चे हैं। अच्छा।

तीसरा क्लास

"ज्ञान का सिमरण ऐसा हो जो आत्म-अभिमानी स्थिति बने और सबको बाबा की स्मृति आ जाये"

ओम् शान्ति। अमृतवेले का योग और नुमाशाम का योग, अमृतवेला बाबा की याद में बैठते हैं। याद से हमारी अशरीरी स्थिति कैसे बने, बाबा हमारी ऐसी स्थिति बना रहा है। नुमाशाम को हमारी एंजिल स्थिति हो, दिन भर में कर्मयोग है। कर्मयोग में अटेन्शन है, यज्ञ सेवा है, संगमयुग है, समय सफल करना है। वो अमृतवेले का नुमाशाम का, दिन भर का अभ्यास करते, फिर रात को बाबा से गुडनाईट करना है। टी.वी. देखना, संसार के समाचार सुनना सुनाना ... मैंने कभी ऐसी भूल नहीं की है। रात को बाबा से गुडनाईट करते तो बाबा कितना खुश होता है, बच्चा सारा दिन क्या करता है, कैसे

करता है, कैसे आत्म-अभिमानी स्थिति में रहने के लिए अटेन्शन रखता है। और सभी आत्माओं को बाबा की याद दिलाने के लिए स्मृति में रहना, जो भक्तिमार्ग में भी कहते हैं सिमर सिमर सुख पाओ। तो ज्ञान का सिमरण करना है फिर जब भी किसी को देखें, कोई मेरे को देखे तो आत्म-अभिमानी स्थिति बने और बाबा की स्मृति आ जावे।

ओम् शान्ति शब्द स्वधर्म की स्मृति दिलाता है, परन्तु मैं सच्ची बात तो यह सुनाती हूँ, इस शरीर की परीक्षा बहुत बड़ी बात है। मैं कहती हूँ बाबा यह आत्मा अभी इस शरीर में किसलिए है? आप मेरे से इस शरीर की परीक्षा इतनी ले रहे हो। मैं बाबा को कहती हूँ यह आपको अच्छा लगता है क्या! मैं आपको उलहना देती हूँ। शरीर अच्छा चलता है तो आपको मैं प्यार करती हूँ। तो क्या बोलूँ उल्हना बोलूँ, जो मुझे बोलना भी अच्छा नहीं लगता है। अभी भी परीक्षा लेना बाबा छोड़ता नहीं है। तो कर्मयोग करती हूँ और तो कुछ नहीं करती हूँ, कम-से-कम नियम अनुसार बाबा की याद में रहूँ और याद दिलाऊं, यह तो हमारा फर्ज कहता है। अगर यह फर्ज पालन करती रहूँ तो मुझे अन्दर खुशी होगी। वैसे खुश बहुत रहती हूँ, खुश रहना कोई बड़ी बात नहीं है पर शरीर की परीक्षा में खुश रहने में आप साथ दो ना!

प्रश्नः- दादी, हम किसी की गलती देखते हैं चाहे हम डिपार्टमेन्ट में या चाहे घर में छोटों की गलती देखते हैं तो उसको हम शिक्षा देते हैं लेकिन हमारी बुद्धि में चले नहीं। शिक्षा दी फिर हम थोड़ा न्यारे हो जायें, फुलस्टॉप, उसके लिए किस बात का अटेन्शन रखें?

उत्तरः- यह क्वेश्चन अच्छा है। पहले पहले जब शुरू में हम होते थे तो एक दो को सावधान करके उन्नति को पाना यह नेचुरल स्वभाव था। अभी वो नहीं है सावधान करना, पर सदा ही हम सावधान रहें। ऐसा सावधान रहें जो मेरे को सावधान देख सावधानी देनी न पड़े, ऑटोमेटिक उसको प्रेरणा मिले। मुझे एक भाई ने कहा था वो बात मुझे अच्छी लगी, यह सबकी केयर करती है, ज्ञान शेयर करती है और इन्सपायर करती है ऊपर चलने के लिये। तो हमारा फर्ज कहता है किसी की केयर भले करें पर ऐसे नहीं कि हम केयरलेस रहें और किसकी परवाह न करें या उसकी गलती देख करके ऐसे ही छोड़ देवें, यह शोभा नहीं है। बाबा ने हमें सत्य ज्ञान दिया है, यह सारा ज्ञान पर्सनल हमारे लिये हैं। जितना ज्ञान हमारे जीवन में है, धारणा में है, उतना हमारे अन्दर में बाबा के लिये प्यार है। बाबा का प्यार ऑटोमेटिक मिलता है। किसी की गलती देख अगर हम बोलते हैं तो उस भान से बोलते हैं, गलती देख करके बोलते हैं इसको ऐसा नहीं करना चाहिए... तो अन्दर में किसके लिए भी ग्लानि है। प्यार में कहें भाई यह तू न कर, तो ऐसे बोलें जो वो समझे मुझे मेरे भले के लिये बोलता है, न कि ग्लानि के लिए बोलता है। एक तो अन्दर में ग्लानि न हो, दूसरा किसी के प्रभाव में भी न हो। तीसरा किसी से भेंट करके भी न बोलें, देखो इनसे यह अच्छा है, ऐसे अगर गलती बताते हैं ना, तो वो शोभता नहीं है। गलती देखना और बताना यह अच्छा धन्धा नहीं है। कोई भी गलती नोट करना फिर औरों को सुनाना या अन्दर विचार करना, यह हमारे लिये अच्छा नहीं है। मैं तो इस बात को बहुत-बहुत अपने लिये खराब समझती हूँ। मैं नोट करूँ, यह और कुछ नहीं करती, यह करती, यह करती... यह हमारे अन्दर स्थिति में ग्लानि के जैसे बहुत संस्कार पैदा हो जाते हैं, यह राँग है। हर एक का अपना पार्ट है, फिर भी हमारी भावना अच्छी है तो बदल जायेगा। कैसा भी है, ऐसा तो कोई नहीं होगा जिसमें खराब आदतें नहीं हैं वो हमारे देखने से, हमारे नोट करने से उसके लिए हम शुभ चिंतक नहीं हैं। इसके लिए मैं कहती हूँ अपना भला करना हो तो शुभ चिंतन अपने लिये, शुभ चिंतक सबके लिये, यह करना जरुरी है।

इतनी ऊंची पढ़ाई पढ़ रहे हैं फिर भी ऐसे वैसे क्वेश्चन उठाने आता है, तो अन्दर में फुलस्टॉप लगाना भी आना चाहिए। अगर फुलस्टॉप नहीं लगा पाये तो क्या पढ़ाई कर रहे हैं? इसलिए हमारा काम है बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश। बीती को बीती करना, यह एक भगवान ने मुझे गिफ्ट दी है। कोई बात याद नहीं।

प्रश्नः- दादी जी क्या जितने लोग हैं उतनी वैराइटीज़ अभिमान की होती हैं? हमको कैसे पता चले कि हमारे में किस प्रकार का अभिमान है? बुद्धि का भी अभिमान वैरायटी रूप में होगा ना!

उत्तरः- अभिमान माना अभिमान। परन्तु मुझे हमेशा दीदी का मिसाल देना अच्छा लगता है हम एक दो को इशारा करते थे, अभिमान से जो बोलने का तरीका है, टोन है वह या तो घृणा वाला होगा या तो प्रभाव वाला होगा। उसका जो बोल-चाल है ना, वह या तो मैं मैं करेगी, या जिसके ऊपर प्रभावित होगी उसकी ही बड़ाई करती रहेगी। उसकी कोई महिमा करे तो वो खुश होते और उस पर प्रभावित हो जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म प्रभाव और घृणा से मुक्त हो करके देही-अभिमानी स्थिति से अपनी स्थिति और औरों की भी देही-अभिमानी स्थिति बनाने में हम साथ देवें। रूहानियत की गहराई में जाओ, जब रूहानियत में हैं, तो उस समय सच्चाई और स्नेह से पहुँचता है। इसमें हमारी मित्रता भावना बहुत काम करती है। जैसे अव्यक्त बाबा आता है गुल्जार दादी में, बाबा की जो खैंच होती है, उस घड़ी

प्यार का जो अनुभव होता है, हम बच्चों से भी ऐसे सबको अनुभव हो।

प्रश्न:- बाबा जो है, जैसा है उसे पूरी रीति कैसे पहचान सकते हैं और बाबा कहते हैं, विरले ही हैं जो बाबा को ऐसे पहचानते हैं तो बाबा को इस तरह से पहचानने की युक्ति क्या है?

उत्तर:- बाबा के समय एक गीत बना था – हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान... तो बाबा ने करेक्शन किया, हमने देखा हमने पाया...यह नहीं बोलो, लेकिन हमने जाना, हमने पाया।

जैसे जौहरी हीरे को पहचानता है यह हीरा है, यह पत्थर है! हीरा है तो सच्चा है या थोड़ा-सा दागी है। जितना हम बाबा को पहचानते हैं ना, उतना हमारी पहचानने की शक्ति मेरे में भी आयेगी, मैं जल्दी पहचानेगी यह हीरा है या पत्थर है यानि कि पहचानने की शक्ति आज के जमाने में बहुत जरूरी है। खास ईश्वरीय सेवा में अगर पहचानने की शक्ति नहीं है तो मैंने स्वयं को भी नहीं समझा और समय को भी नहीं पहचाना। समझो यहाँ बैठे हैं, बैठने से जो हमको मिल रहा है वो भी नहीं समझा है। समझो बाबा के सामने बैठे हैं, बाबा देखता है बच्चे कैसे कैच करते हैं! क्योंकि पहचानने से जो शक्ति आती है, जो स्नेह पैदा होता है वो मिस है। पहचानने से प्राप्ति है, जितना हम एक दो को पहचानते हैं उतना हमको एक दो के लिए रूहानी स्नेह है।

बाबा को यथार्थ पहचानने के लिए अनुभव की शक्ति चाहिए। बाबा परमपिता परमात्मा है, सर्वशक्तिवान है, प्रैक्टिकल ज्ञान का सागर है। शिवबाबा को तो इन आँखों से नहीं देख सकते लेकिन ब्रह्माबाबा तो हमारी आँखों के सामने है। शिवबाबा ने कैसे इस रथ को ढूँढा, कैसे इस रथ द्वारा सेवा की, यह है पहचानने की बात। बाबा को जितना पहचानते हैं उतनी भावना पैदा होती है, उतनी प्राप्ति होती है। अच्छा।

"मेरे को तेरे में परिवर्तन कर ट्रस्टी बनो, मर्सीफुल बन दुआयें दो, दुआयें लो"

(गुल्जार दादी जी)

सभी के चेहरे खुश हर्षित रूप में दिखाई दे रहे हैं क्योंकि हमें कौन मिला है, अगर उसकी महिमा का एक शब्द भी याद है कि बाबा हमारा क्या है? दुनिया वाले बिचारे गाते रहते हैं, कीर्तन करते हैं, भजन गाते हैं, पुकारते हैं लेकिन हम क्या कहेंगे? हम कहेंगे कि जो पाना था वो पा लिया। पा लिया कि अभी पाना है? पा लिया। तो मेरा बाबा है, मेरे शब्द को अण्डरलाइन करो क्योंकि हमने भी 63 जन्म भक्ति की और पुकारा भी बहुत कि आओ और बाबा ड्रामा अनुसार अब आया है मेरे लिये। बाबा मेरा है, मेरे लिये ही आया है, इसमें बहुत रूहानी नशा चढ़ता है। मेरा शब्द कहने से अपना अधिकार याद आ जाता है। जिस पर जिसका अधिकार होता है, वही कह सकता है यह मेरी है या मेरा है इसलिये बाबा कहते सिर्फ बाबा शब्द नहीं बोलो। बाबा भगवान है, बाबा बहुत बड़ा है, बाबा परमधाम में रहता है... वो तो ठीक है लेकिन मेरा बाबा है, यह है मुख्य बात। भगवान के ऊपर हम अधिकार रख सकते हैं क्योंकि भगवान ने हमको जन्मसिद्ध अधिकार दिया है। हमने कहा मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा कि मेरे बच्चे तो अधिकार हो गया ना, हमारा बाबा पर और बाबा का अधिकार हमारे ऊपर। तो मेरा बाबा यह भी याद रखो तो सारे दिन में जो 63 जन्म से हद के मेरे मेरे का कॉन्सेस रहा है, वो सब खत्म होता जायेगा।

जैसे मेरा शरीर, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे-मेरे-मेरे... तो यह मेरे मेरे का ही फेरा है लेकिन बाबा भी कितना चतुर है। बाबा कहते हैं तुमको मेरा मेरा कहने की आदत है तो मेरा ही कहो। मेरा बाबा कहेंगे तो इसमें मेरा शब्द तो आ गया। उस मेरे में अनेक मेरे हैं। शरीर मेरा है तो शरीर में कितनी कर्मेन्द्रियां हैं, मेरा हाथ, मेरा पाँव, मेरी आँख, मेरे कान..... देखो कितना मेरा-मेरा है? परिवार में भी कितने मेरे हैं? अगर एक परदादा ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर कोई हो और वो अपना सारा परिवार देखे, कितनी लम्बी लिस्ट होगी। कितना मेरा-मेरा होगा। तो मेरे मेरे ने ही हमको बॉडी-कॉन्सेसनेस में लाया। अब उसी कॉन्सेसनेस को बदलके मेरा-मेरा कहने का बहुत अभ्यास करना है। जैसे पहले मैं आत्मिक स्थिति में स्थित हूँ क्योंकि पहला पाठ हमारा यह है - मैं आत्मा हूँ। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना होता है, तो देखो मैं स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद कर रहा हूँ? बॉडी-कॉन्सेसनेस के भान में रह सिर्फ बाबा बाबा सोचने कहने से कुछ नहीं होता है क्योंकि यह बाबा तो बॉडी-कॉन्सेसनेस का है ही नहीं। तो

अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो, यह लाइन बाबा की अण्डरलाइन करके अच्छी तरह से बहुतकाल तक अभ्यास करो।

बाबा ने हमको जीवनमुक्ति का रास्ता एक शब्द में दे दिया है वो शब्द कौन-सा है, जानते हो? एक शब्द है मेरा, दूसरा शब्द है तेरा। मेरा मेरा खत्म हो गया, तो मेरा हो गया तेरा। तेरा माना ट्रस्टी। मेरा माना गृहस्थी। गृहस्थी मेरा मेरा.. कहेगा, हम कहेंगे बाबा का है...। गाते तो थे तेरा तुझको अर्पण, मेरा कुछ नाही लागे.. लेकिन अन्दर से एक छोटी सुई को भी अपना समझते हैं क्योंकि मेरे का भान सब याद दिलाता है। अगर सचमुच तेरा तेरा का भान है तो हो गये बेफिक्र बादशाह, ट्रस्टी। गृहस्थी माना मेरा मेरा का बोझ बढ़ता जाता है और तेरा तेरा करो तो सब बाबा पर बोझ चला गया। मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों का बादशाह हूँ तो जो ऐसे बेफिक्र हैं वही बादशाह बन सकते हैं। अगर कोई भी मेरापन होगा तो बेफिक्र नहीं। तो बहुत सहज है कि यह मेरापन जितना बाबा में लायेंगे, जितना हो सके मेरापन बाबा में लाओ, यह अण्डरलाइन करो। अगर मेरा बाबा कह दिया तो आपका अधिकार रहेगा। बाबा बंधा हुआ है। तो भगवान को भी हम प्यार की रस्सी से बांध सकते हैं।

हर शक्ति पर हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, तो कभी दिलशिकस्त नहीं होना क्योंकि मेरे लिये बाबा आया हुआ है। मेरा पूरा अधिकार बाबा के ऊपर है, तो बाबा मेरा नहीं सुनेगा तो किसका सुनेगा लेकिन विधि पूर्वक हो। आत्मा समझके बाप से बात करो। अधिकार आत्मा को मिलता है, शरीर को नहीं मिलता है। तो हमारा पहला पाठ है आत्मा का। मैं अपने को आत्मा समझती हूँ तो परमात्मा से कनेक्शन नेचुरल जुट जायेगा। सिवाए बाबा के और कोई याद आयेगा ही नहीं। अभी एक सेकण्ड के लिये शरीर को भूलके अपने को आत्मा समझके देखो। अभी सोचो आत्मा हो गये, शरीर का भान किनारा हो गया। अच्छा, अभी मैं आत्मा हूँ तो आत्मा के लिये क्या है? यह संसार चाहिए आत्मा को? पदार्थ चाहिए? यह बॉडी के सम्बन्ध चाहिए? आत्मा के लिये तो सब सम्बन्ध परमात्मा के साथ हैं। त्वमेव माताश्च... यह एक ही परमात्मा के लिये कहा गया है। तो आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो लगेगा कि हमारा संसार ही एक बाबा है। और कहाँ बुद्धि जायेगी ही नहीं। तो मैं आत्मा हूँ, यह अभ्यास बीच-बीच में करना चाहिए। शरीर के भान में रहने का अभ्यास नेचुरल हो गया है, नेचर हो गया है, ऐसे ही मैं आत्मा हूँ - यह हमारी नेचर नेचुरल हो जाये, सेकेण्ड में याद करे मैं अशरीरी आत्मा हूँ। आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हैं ना? बस, यह प्रैक्टिस सारे दिन में घड़ी-घड़ी हो। तो काम करते भी मैं आत्मा करावनहार हूँ मालिक हूँ, मैं बादशाह हूँ, राजा हूँ स्वराज्य, स्व के ऊपर राज्य। आत्मा इस बॉडी में जो भी कर्मेन्द्रियाँ हैं मन बुद्धि संस्कार हैं, सबके ऊपर राजा है। तो यह कर्मेन्द्रियाँ इसकी मैं मालिक आत्मा हूँ, यह स्मृति पक्की रहनी चाहिए। फिर बाबा की याद कोई मुश्किल नहीं।

समय तो हमारी क्रियेशन है, क्रियेटर तेज है या क्रियेशन तेज है, कौन तेज है? तो बाबा रिजल्ट पूछेंगे इसलिये आप अब ऐसा पुरुषार्थ करो तो बाबा को अच्छी रिजल्ट दे सकेंगे। बाबा भी वरदान देंगे, खुश होंगे। वैसे तो बाबा खुश रहता है लेकिन खुशी में खुशी। और आजकल बाबा ने तो बहुत सहज पुरुषार्थ बता दिया कि दुआयें दो और दुआयें लो। कोई बद्-दुआ देवे तो भी उसको आप दुआ दो। बस। बद्-दुआ माना खराब चीज़, तो बाबा कहते खराब चीज़ क्यों अपने अन्दर मन में डालते? तो जिस समय कोई बद्-दुआ देता है तो उस समय कैसे हम बद-दुआ सुनते हुए भी उसको चेन्ज करें? उस समय आप अपने को यह समझो कि मैं मर्सीफुल हूँ। रहमदिल हूँ क्योंकि मैं उस समय यह समझता हूँ तो यह बिचारा परवश है, कोई क्रोध के वश है, कोई ईर्ष्या के, कोई लोभ के, कोई मोह के वश, कोई अभिमान के वश... तो बिचारे परवश के कारण ऐसा करते हैं, तो ऐसे परवश के कारण कभी किसी को क्रोध नहीं आता है और आना भी नहीं चाहिए। जान-बूझके कोई करता है तो वो अलग बात है।

तो बाबा कहते हमको मर्सीफुल स्टेज में रहना चाहिए क्योंकि तुम्हारे जड़ चित्र लास्ट जन्म तक भी मर्सी देते हैं, तब तो मांगते हैं - दया करो, कृपा करो। तो बाबा कहते तुम अभी भी मर्सीफुल, दयालु, कृपालु बनो ना! अच्छा, बिचारा परवश होके किया, गुस्सा करने वाला तो गुस्सा करके शान्त हो गया लेकिन जिसने उसे अन्दर मन में फील किया उसको चैन नहीं आता है, कितना समय उसका यूँ ही वेस्ट में जाता है। इससे नुकसान तो पहले अपने को ही होता है इसलिये बाबा ने कहा है मर्सीफुल हो करके रहो तो दुआ दे सकेंगे, ले भी सकेंगे, तो आपके पुण्य का खाता जमा हो जायेगा। जिसका यह खाता जितना जमा होगा वो हर जन्म में सदा खुश होगा। और हमें तो बाबा ने 21 जन्म की गैरंटी दी है। तो दुआ दो और दुआ लो - यह विधि बहुत सहज है, बहुत अच्छी विधि है, यह भी करते रहो तो आपके पुण्य का खाता जमा होता रहेगा, जिससे आप सदा सुखी रहेंगे, सब प्राप्ति होंगी। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

स्वयं को निमित्त समझकर हर कार्य करो तो बेफिकर बादशाह बन जायेंगे

हम सब हैं बेफ़िक्र बादशाह बाबा के बच्चे–सदा बेगमपुर के बादशाह। हमें न कोई भी फ़िकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फ़िकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, गलत हुआ तो भी आप जवाबदार हो। तो फ़िकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है इसलिए संगमयुग की विशेषता है - बेफ़िक्र बादशाह बनो।

आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फ़िकर नहीं होगा। जो खिलावे, सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं करो।

हमारा एक ही मन्त्र है – जी हजूर हम हाज़िर हैं। वह हजूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! तो फिर आप लोग क्यों चिन्ता करते? किस बात की फ़िकरात करते? बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफ़ा में रहते हैं, पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे। कहने का भाव है फ़िकर से फ़ारिग रहो। एकदम सब फ़िकरात त्याग करके जाओ। जो आवे जैसा आवे, जो खिलावे जहाँ जैसे सुलावे, सबमें सन्तुष्टमणी बनो। सन्तुष्टमणी रहो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ। दिलखुश मिठाई खाओ, बस।

दूसरी फिकरात किस चीज़ की आती? कभी-कभी आपस में संगठन में रहते, थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता – इसकी भी विधि सीखो। आप आपस में दो लोग रहते आपकी आपस में नहीं बनती, आप कहते हैं यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, यह भी बुरा। लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं होगी? तो अच्छाई से बात करो ना। तो जब तुम अच्छाई वाले से बात कर लेंगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। बुराई को देखकर बात नहीं करो, उसके बदले अच्छाई देखकर बात करो तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी, जिसको बाबा कहते तुम शुभ-भावना रखो तो शुभ भावना से कामना पूरी होती है। फिर हम किसके लिए लड़ें। मान लो संगठन है, संगठन में आपने कोई बात कही, मैंने नहीं मानी तो आपको बुरा लगा कि यह मेरी बात नहीं मानता, जिसको जिद्द कहते हैं। अच्छा कोई बात नहीं मानता, जिद्द करता आप वह बात छोड़ दो। आपेही ठण्डा हो जायेगा। आपकी भावना है उसको अच्छा बनाने की तो आप दूसरी युक्ति से बनाओ। जो राइट बात है, उसको बताना हमारा कर्तव्य है। आगे वाले का काम है मानना, फिर भी कोई जिद्द करता है तो वह उसका विकर्म बनता, हम उसके विकर्म के साथी नहीं बने। एक विकर्म करे तो मैं दूसरा विकर्म नहीं करूँ। कोई बात भले रांग दूसरे की है मेरी नहीं है, लेकिन मैंने कह दिया अच्छा भैया ओम् शान्ति, सॉरी... तो वह बात खत्म हो गई। जो टेम्परेचर चढ़ा था वह स्वत: ही डाउन हो जायेगा। मैंने सॉरी किया तो इसमें मेरी साड़ी तो मैली नहीं हो गई ना? सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया, ओ. के. जो तुम्हारी इच्छा। जैसे तुम चाहो, बस, खत्म।

श्रीमत के फरमान पर चलना - यह हमारा धर्म है। धर्म कहो, आज्ञा कहो, मर्यादा कहो। तो श्रीमत क्या कहती है–वह सोचो, बस। क्या श्रीमत कहती है कि आपस में लड़ो, मूड ऑफ करो, मनमत पर चलो? श्रीमत ने कहा है क्या कि किसी से लगाव रखो, ऐसा वैसा व्यवहार करो, इस-इस तरह का धन्धा करो? तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ - इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत पर न चलना माना विकर्म करना। श्रीमत के अन्दर सब धारणायें आती हैं। श्रीमत कहती रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। यह सब श्रीमत है ना। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। तो बाबा और श्रीमत। अब श्रीमत कहती है कि आप योग की यात्रा का अभ्यास ज्यादा करो। यह है अन्तिम श्रीमत की आज्ञा, इसीलिए अब यह सब जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा।

हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। कभी कुवचन नहीं निकले। कईयों के मुख पर गाली झट आ जाती, जो बहुत-बहुत खराब लगता है। दो-चार गालियाँ सेकण्ड में किसको दे देंगे, एक दूसरे का गला पकडकर किसी को चाटा मार देंगे, यह हम ब्राह्मण कर नहीं सकते। क्या जिस टाइम तुमने किसी को चाटा मारा, तुम्हें दर्द नहीं हुआ? क्रोधमुक्त होने का तो सभी पक्का वायदा करके जाओ। दृष्टि-वृत्ति भी सदा पावन रहे–ऐसा पक्का व्रत लो। अच्छा। ओम् शान्ति।